भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 1278
उत्तर देने की तारीख 27.07.2026

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

1278. श्री बैजयंत पांडा :
श्री मुरसोली एस :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले पांच वर्षों और वर्तमान वर्ष के दौरान देशभर में आयोजित किए गए पाण्डुलिपि सर्वेक्षणों और किए गए डिजिटलीकरण का ब्यौरा क्या है और राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (एनएमएम) के कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति क्या है;

(ख) क्या सरकार ने सांस्थानिक क्षमता, क्षेत्रीय कवरेज और आवंटित निधि के उपयोग के संबंध में इस मिशन का कोई मूल्यांकन या समीक्षा की है;

(ग) यदि हां, तो इसके मुख्य निष्कर्षो क्या हैं; और

(घ) उक्त अवधि के दौरान तंजावुर जिले सहित तमिलनाडु के संग्रहालयों, विशेष रूप से सरस्वती महल पुस्तकालय से पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए ओडिशा में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की प्रगति के साथ-साथ कवरेज कितना हुआ है और इसके अंतर्गत चिह्नित, संरक्षित व डिजिटलीकृत पाण्डुलिपियों की संख्या कितनी है और इसमें शामिल सांस्थानिक भागीदारों तथा इसके लिए जारी की गई निधि का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): सरकार ने एक प्रमुख पहल के रूप में संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत पूर्ववर्ती राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (एनएमएम) के स्थान पर ज्ञान भारतम मिशन की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य देश भर के शैक्षणिक संस्थानों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों तथा निजी संग्रहों में मौजूद पांडुलिपियों का सर्वेक्षण, प्रलेखन, संरक्षण और डिजिटलीकरण करना और उन्हें सुलभ कराना है। विविध भाषाओं और लिपियों का प्रतिनिधित्व करने वाली पांडुलिपियों, उनके रिपॉजिटरी और संरक्षकों की पहचान

करने तथा प्रलेखन के लिए मार्च, 2026 में देश के सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वेक्षण आयोजित किया गया था। इस सर्वेक्षण के दौरान 1.19 करोड़ से अधिक पांडुलिपियों की जानकारी प्राप्त हुई है। वर्तमान में देश भर में 8 लाख से अधिक पांडुलिपियाँ डिजिटलीकृत की जा चुकी हैं, जिनमें से 3.90 लाख से अधिक पांडुलिपियाँ आम जनता के लिए ज्ञान भारतम पोर्टल पर व्यू मोड में उपलब्ध हैं।

(ख) और (ग): ज्ञान भारतम एक अखिल भारतीय पहल है, जिसका उद्देश्य देश भर में चिन्हित की गई पांडुलिपियों को सूचीबद्ध, संरक्षित, डिजिटलीकृत और प्रकाशित करना है। इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए क्लस्टर केंद्र और स्वतंत्र केन्द्रों के एक ढांचे की परिकल्पना की गई है। इन केंद्रों को ऊपर वर्णित कार्यकलापों को पूरा करने के लिए सहायता अनुदान के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में मिशन के कार्यान्वयन और समीक्षा के लिए संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को नोडल समन्वय प्राधिकरण के रूप में शामिल किया गया है। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और उनकी रिपॉजिटरी को प्रयोज्य ढांचे, प्रचालनात्मक आवश्यकताओं और निधियों की उपलब्धता के अनुसार वित्तीय सहायता मामला-दर-मामला आधार पर प्रदान की जाती है।

(घ): ज्ञान भारतम मिशन के तहत ओडिशा में स्थित दो केंद्रों यथा भद्रक स्थित सरस्वती (संस्कृत अकादमी ऑफ रिसर्च फॉर एडवांस्ड सोसाइटी थ्रू वैदिक एंड अलाइड ट्रैडीशन ऑफ इंडिया) तथा संस्कृत विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर को शामिल किया गया है। राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वेक्षण के दौरान ओडिशा से कुल 78,056 पांडुलिपियों की जानकारी प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त, 800 पांडुलिपियों का संरक्षण किया गया है और 848 पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण किया जा चुका है। फरवरी, 2026 में सरस्वती, भद्रक, ओडिशा को पाण्डुलिपि से संबंधित कार्यकलापों को पूरा करने के लिए 28 लाख रुपये का अनुदान जारी किया गया है।

जहाँ तक तंजावुर, तमिलनाडु का संबंध है, राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वेक्षण के दौरान तमिलनाडु से दर्ज की गई कुल 1,41,652 पांडुलिपियों में से 47,496 पांडुलिपियाँ अकेले सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजावुर से प्राप्त हुई हैं।

*****